

युवा दिवस विशेष: जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का संदेश देते थे स्वामी विवेकानंद

आचार्य प्रशांत : 11-14 minutes



स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनलवरी 1863 को हुआ था। - फोटो : Social Media

विस्तार

Follow Us  

देखो, किताबी ज्ञान देने वाले तो हमेशा से बहुत रहे हैं। स्वामी विवेकानंद अनूठे हैं उस आदर्श से जो उन्होंने जी कर प्रस्तुत किया। बहुत कम तुमने साधु-संत, सन्यासी देखे होंगे, जो इतने सुगठित-सुडौल शरीर के हों जितने विवेकानंद थे। खेल की, कसरत की उनकी दिनचर्या में बंधी हुई जगह थी, और यही नहीं कि सिर्फ व्यक्तिगत रूप से खेलते थे; अपने साथियों को भी कहें कि- "आवश्यक है, व्यायाम आवश्यक है।"

अब इस बात को समझना; सूक्ष्म है। एक ओर तो शरीर को बनाकर रखना है, और दूसरी ओर शरीर से चिपक भी नहीं जाना है- जैसे शरीर एक उपकरण है, एक संसाधन है; इस्तेमाल करना है उसका। लेकिन जिस चीज का इस्तेमाल करना है, उसको इस्तेमाल करने के लिए ही सही, स्वस्थ और मजबूत तो रखोगे न? तो मजबूत तो इसको रखना है।

उन्होंने कहा, "मजबूत रखना है, लेकिन इससे पहचान नहीं बांध लेनी है। जब मौका आएगा, इसको हंसते-हंसते त्याग भी देंगे और शरीर की जितनी हम सेवा कर रहे हैं, जितना इसको तेल पिला रहे हैं, जितना इसको व्यायाम दे रहे हैं, इससे दूना इससे काम लेंगे। तो देह, ये मत सोचना कि मैं तेरा सत्कार भर कर रहा हूँ। देह की सेवा बिलकुल करेंगे; उसे अच्छा भोजन देंगे, मांसपेशियों को ताकत से भरपूर रखेंगे, और ये सब करके तुझसे काम वसूलेंगे।"

देह काम वसूलने के लिए है। देह चमकाकर रूई में सुरक्षित सजाने के लिए थोड़े ही है। ये नई बात थी। सन्यासी फुटबॉल खेल रहे हैं- ये बिलकुल नई बात थी। नहीं तो बूढ़े भारत की बूढ़ी मान्यता तो ये रही थी कि सन्यासी अगर किसी को खेलते हुए देखें, तो कहें, "आज ये खेल रहे हैं, कल काल इनके साथ खेलोगा बच्चा।" तो इस ढहते हुए देश के ढहते हुए अध्यात्म में स्वामी विवेकानंद ने एक ताकत भर दी - "स्ट्रेंथ इज़ लाइफ, वीकनेस इज़ डेथ (शक्ति जीवन है, निर्बलता मृत्यु है)।"

सुनने में साधारण सी बात है, पर बहुत-बहुत कीमती और प्रासंगिक बात है, क्योंकि बहुत पुराना है भारत; इतना पुराना होता गया, होता गया, वृद्ध ही हो गया, जर-जर ही हो गया; ताकत को, स्ट्रेंथ को बिलकुल भूल ही गया। उस वृद्ध भारत में नए प्राणों का संचार

करा स्वामी विवेकानंद ने।